एक अशिष्ट व्यक्ति
इदरीस

यह कहानी एक ऐसे अशिष्ट व्यक्ति की है जो दूसरे लोगों के साथ बुरा व्यवहार करता था और एक चतुर लड़के की है जो उसके व्यवहार को बदलने के लिए एक योजना बनाता है. गाँव वालों की सहायता से लड़का अपनी योजना में सफल होता है.
यह कहानी बच्चों को मनोरंजक तो लगेगी ही, उन्हें यह भी बताएगी कि झगड़े सुलझाने में नेतृत्व और आपसी सहयोग का कितना महत्व होता है.

एक अशिष्ट व्यक्ति

इदरीस

एक समय की बात है, हज़ारों वर्ष पहले जब पक्षी उल्टा उड़ा करते थे, कहीं एक गाँव था.

हर व्यक्ति जिसका गाँव में अपना घर था, उसका अपना एक खेत भी था. और उन खेतों में वह लोग आलू और गाजर और गोभी और अन्य प्रकार की फसलें उगाया करते थे.

अब उस गाँव में रहने वाले सब लोग बहुत ही शिष्ट और अच्छा व्यवहार करने वाले लोग थे, सिवाय एक आदमी के जो बहुत अशिष्ट था.
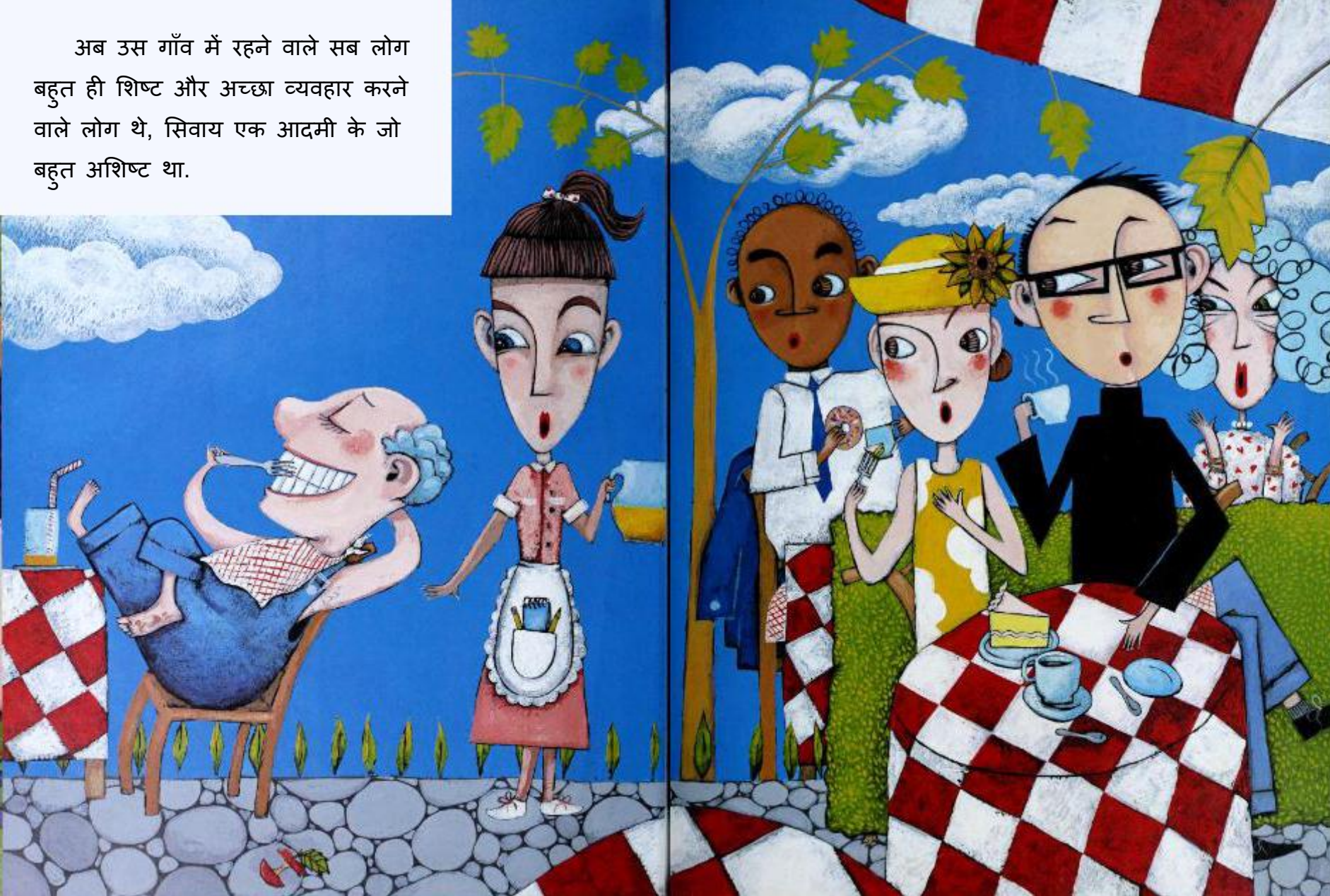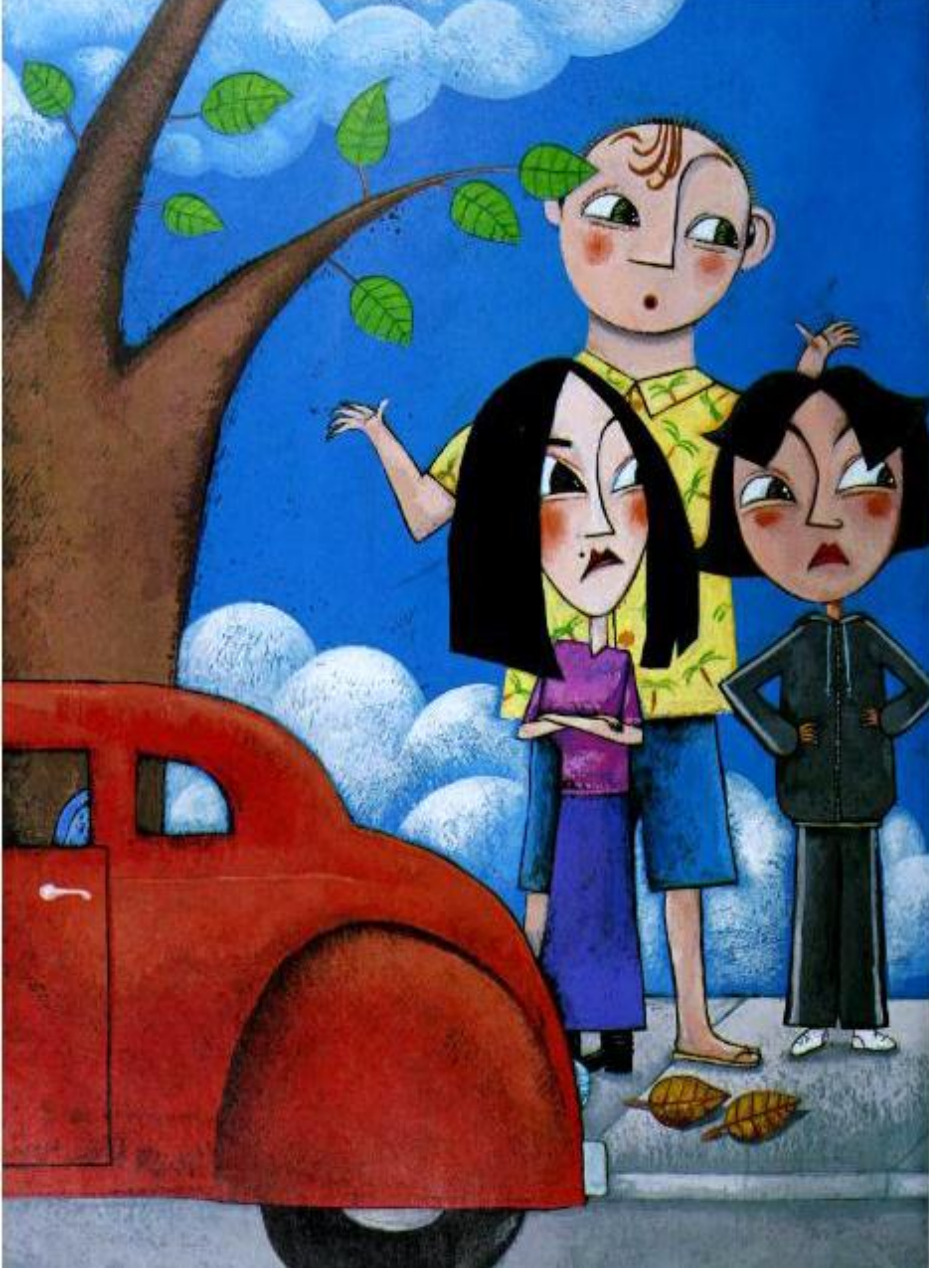
जब कोई उस अशिष्ट आदमी को 'शुभ दिवस' कहता तो वह पलट कर अपशब्द बोलता. और जब कोई उसे 'शुभ संध्या' कहता तब भी वह बुरे शब्द कह कर चिढ़ाता.

उसके ऐसे व्यवहार से लोग नाराज़ हो जाते और कहते, 'तुम ऐसा अशिष्ट व्यवहार क्यों करते हो.'

लेकिन वह तो सदा सिर्फ बकबक ही करता और बुरी बातें कह कर सब का अपमान ही करता.

लंबे समय तक लोगों ने उसके बुरे व्यवहार की अधिक परवाह नहीं की. वह जानते थे कि अच्छा व्यवहार कैसा होता है और बुरा व्यवहार कैसा होता है और अकसर वह उस अशिष्ट आदमी की ओर खास ध्यान ही न देते थे.

लेकिन फिर उसका व्यवहार और भी खराब हो गया. हर रात घर से बाहर आकर वह अलग-अलग घरों के सामने खड़े हो जाता और टीन के खाली डिब्बों को ज़ोर-ज़ोर से पीटने लगता और भयंकर शोर करने लगता.

धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम!

लोग नींद से जाग जाते. खिड़कियाँ खोल कर वह बाहर देखते ओर बोलते, ‘इतना हुल्लड़ क्यों मचा रखा है?’

लेकिन वह तो डिब्बे को और ज़ोर से पीटना शुरू कर देता.

धड़ाम! धड़ाम!

धड़ाम! धड़ाम!

धाड़! धड़ाम!

लोगों को समझ ही न आ रहा था कि उसके साथ क्या करें.

एक दिन अशिष्ट आदमी अपने मित्रों के साथ रहने के लिए किसी दूसरे गाँव गया. गाँव से उसके बाहर जाने पर लोग इतने प्रसन्न हुए कि उसे जाता हुआ देखने के लिये सब इकट्ठे हो गये.
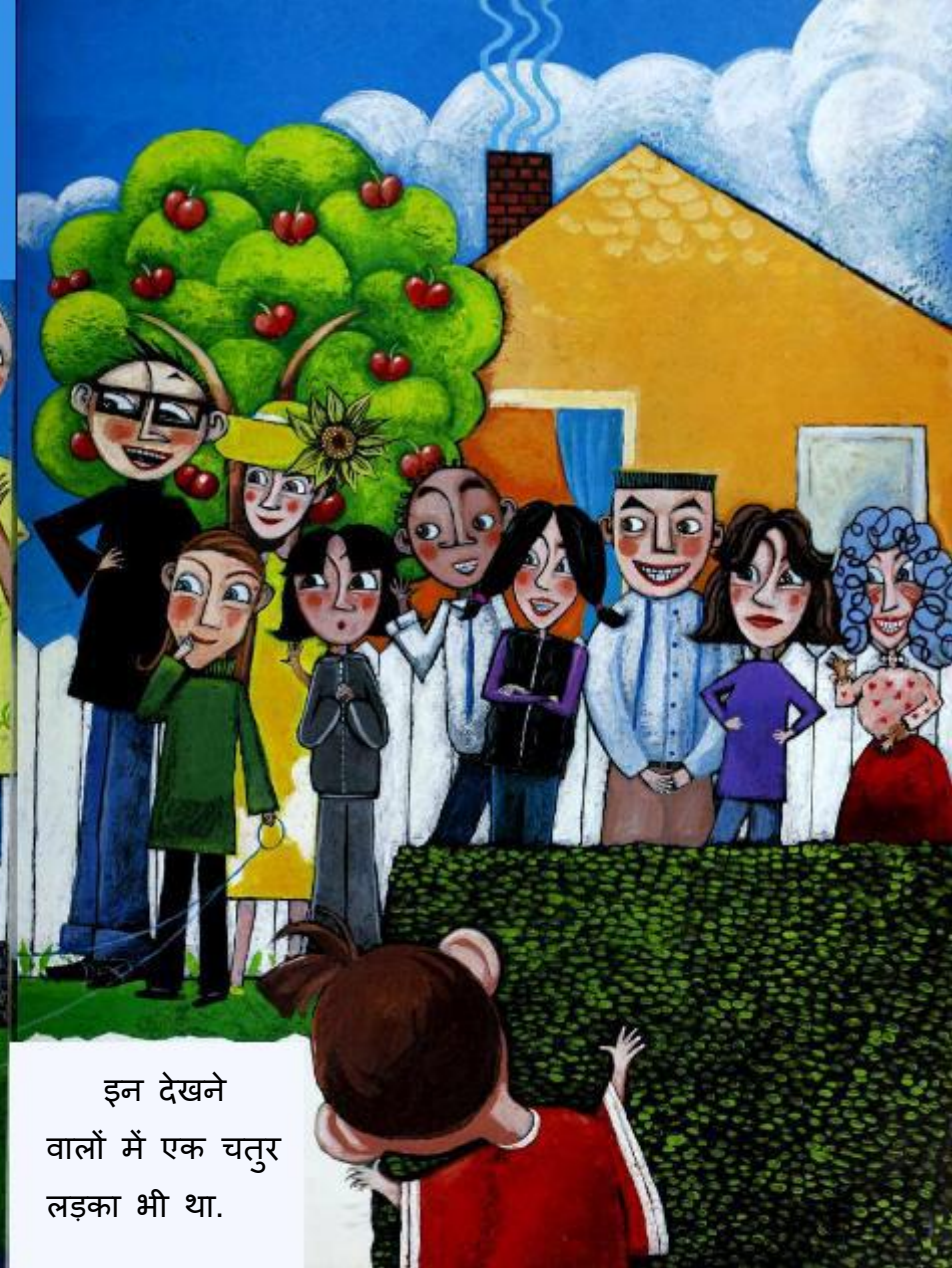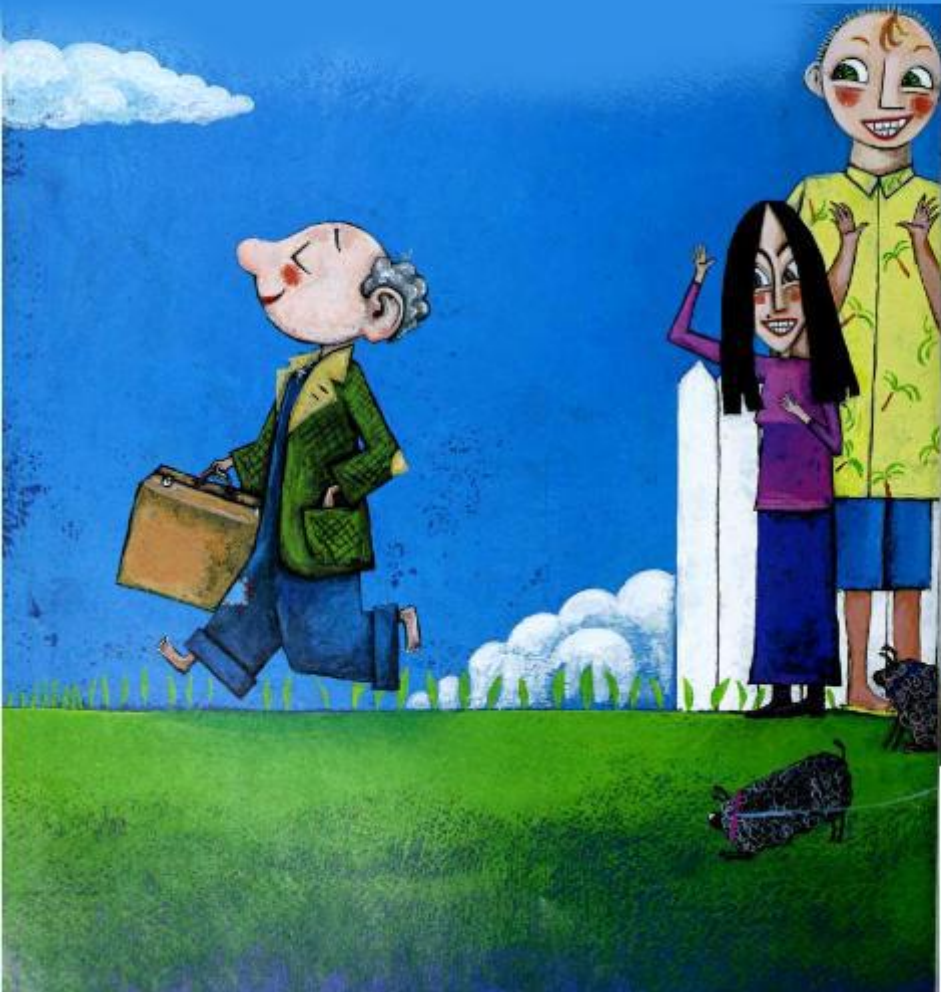
इन देखने वालों में एक चतुर लड़का भी था.

जैसे ही वह आदमी आँख से ओझल हुआ, चतुर लड़का एक डिब्बे पर खड़ा हो गया और फिर सब को निकट आने के लिए उसने कहा.

जब लोग निकट आ गये तो चतुर लड़के ने कहा, ‘मैं उस अशिष्ट आदमी के विषय में आपसे बात करना चाहता हूँ.’

सब एक साथ बोलने लगे.

'भगवान की कृपा है.'

'हां, वह चला गया.'

'वह तो गया.'

'कितना अच्छा लग रहा है.'

'हम उसके विषय में क्यों बात करे?'

'लेकिन वह वापस आएगा!' चतुर लड़के ने कहा.

'तुम ठीक कह रहे हो,' एक वृद्ध महिला ने कहा. 'वह वापस आएगा और फिर से हमें वैसे ही परेशान करेगा!'

'हाँ, सच में,' एक वृद्ध ने कहा.

‘हम क्या कर सकते हैं?’ लोग चिल्लाये.

‘मेरे मन में एक योजना है,’ चतुर लड़के ने कहा. ‘मैंने एक उपाय सोचा है जिससे हम उसे अपना व्यवहार बदलने के लिए बाध्य कर सकते हैं.’

‘हमें बताओ, अभी!’ लोग ने चिल्ला कर कहा.

‘सुनो,’ चतुर लड़का बोला. ‘उस आदमी का एक खेत है जिसमें उसने आलू लगा रखे हैं. जब तक वह गाँव से बाहर है, हम सारे आलू निकाल कर उनकी जगह ज़मीन में गाजरें गाड़ देंगे.

‘फिर जब वह वापस आएगा हमें ऐसे दिखाएँगे कि वह खेत उसका नहीं है और यह गाँव भी उसका नहीं है.’

‘उसके घर का क्या होगा?’ वृद्ध महिला ने पूछा. ‘वह अपने घर जाएगा और समझ जाएगा कि यह गाँव उसका ही है क्योंकि वह अपने घर को पहचान जाएगा.’

‘उसके घर का रंग लाल है.’ चतुर लड़के ने कहा. ‘हम उस पर हरा रंग कर देंगे तो वह समझेगा कि वह कोई और घर है.’

‘लेकिन अगर वह घर के अंदर गया तो?’ वृद्ध महिला ने पूछा.

‘मैंने उसका उपाय भी सोच रखा है,’ चतुर लड़का बोला.
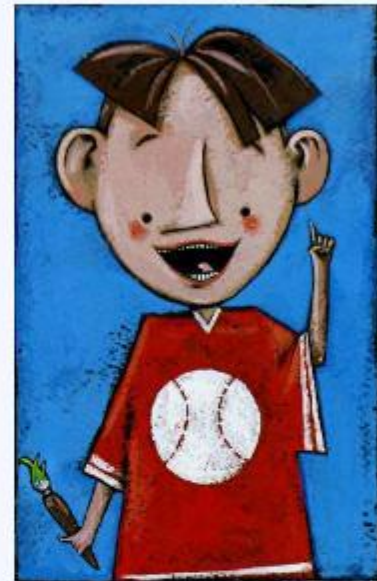
‘हम घर की दीवारों पर कोई अलग रंग कर देंगे और फर्नीचर पर भी अलग रंग कर देंगे और सब वस्तुओं को अलग तरीके से सजा देंगे. फिर उसे अवश्य लगेगा कि वह किसी और का घर है.’

‘इससे हमें क्या लाभ होगा?’ कई लोगों ने पूछा.

‘अहा,’ चतुर लड़का बोला. ‘या तो वह यहाँ से चला जाएगा या उसे अपना व्यवहार बदलना पड़ेगा.’

‘मुझे लगता है,’ वृद्ध महिला बोली. ‘यह उपाय शायद काम कर जाए.’

सब लोग इकट्ठे हो गये और खूब मेहनत करने लगे. उन्होंने खोद कर उस आदमी के सारे आलू बाहर निकाल लिये और खेत में आलुओं की जगह ज़मीन में गाजरें दबा दीं.

उन्होंने उसके घर के बाहर दीवारों पर नया रंग पोत दिया.
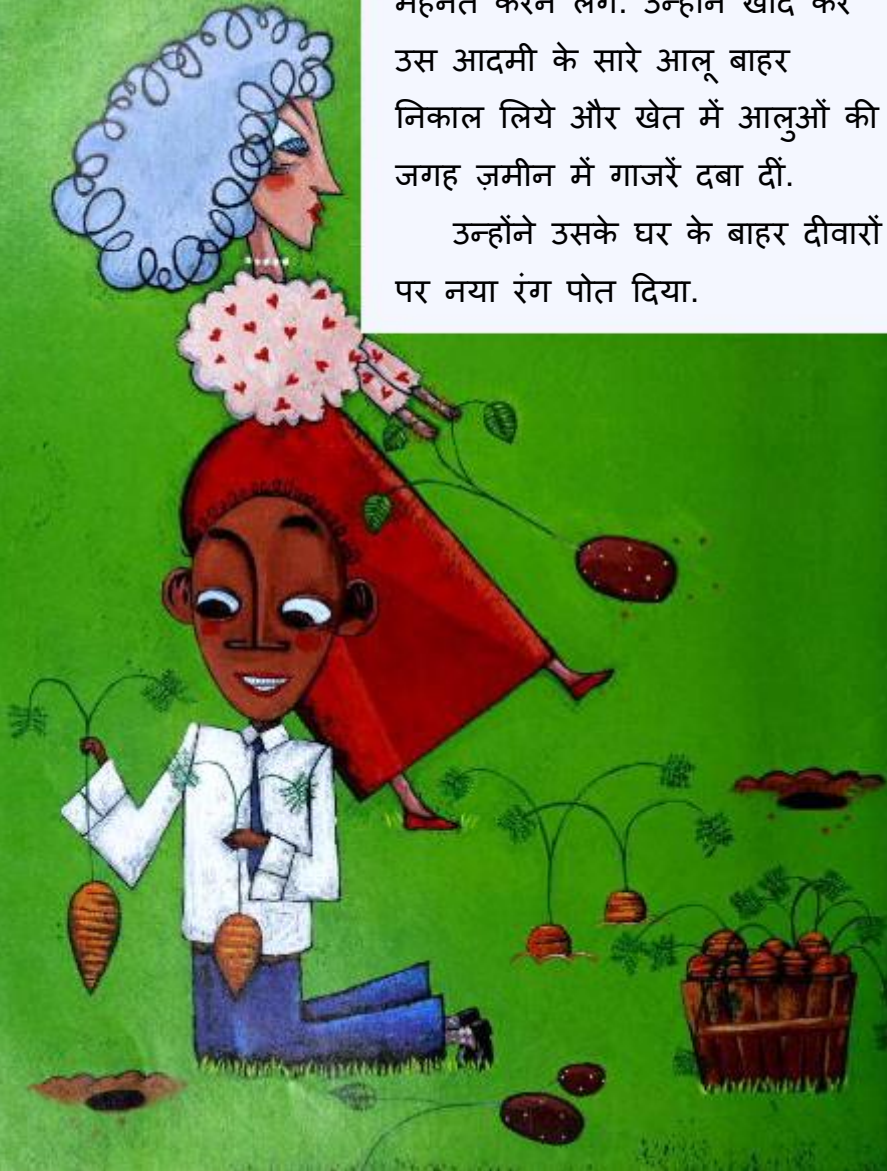
उन्होंने घर के अंदर भी दीवारों पर अलग रंग लगा दिया. उन्होंने उसके फर्नीचर को भी रंग दिया. और सब वस्तुओं को ऐसे सजा दिया कि वह एक अलग ही घर दिखाई दे रहा था.
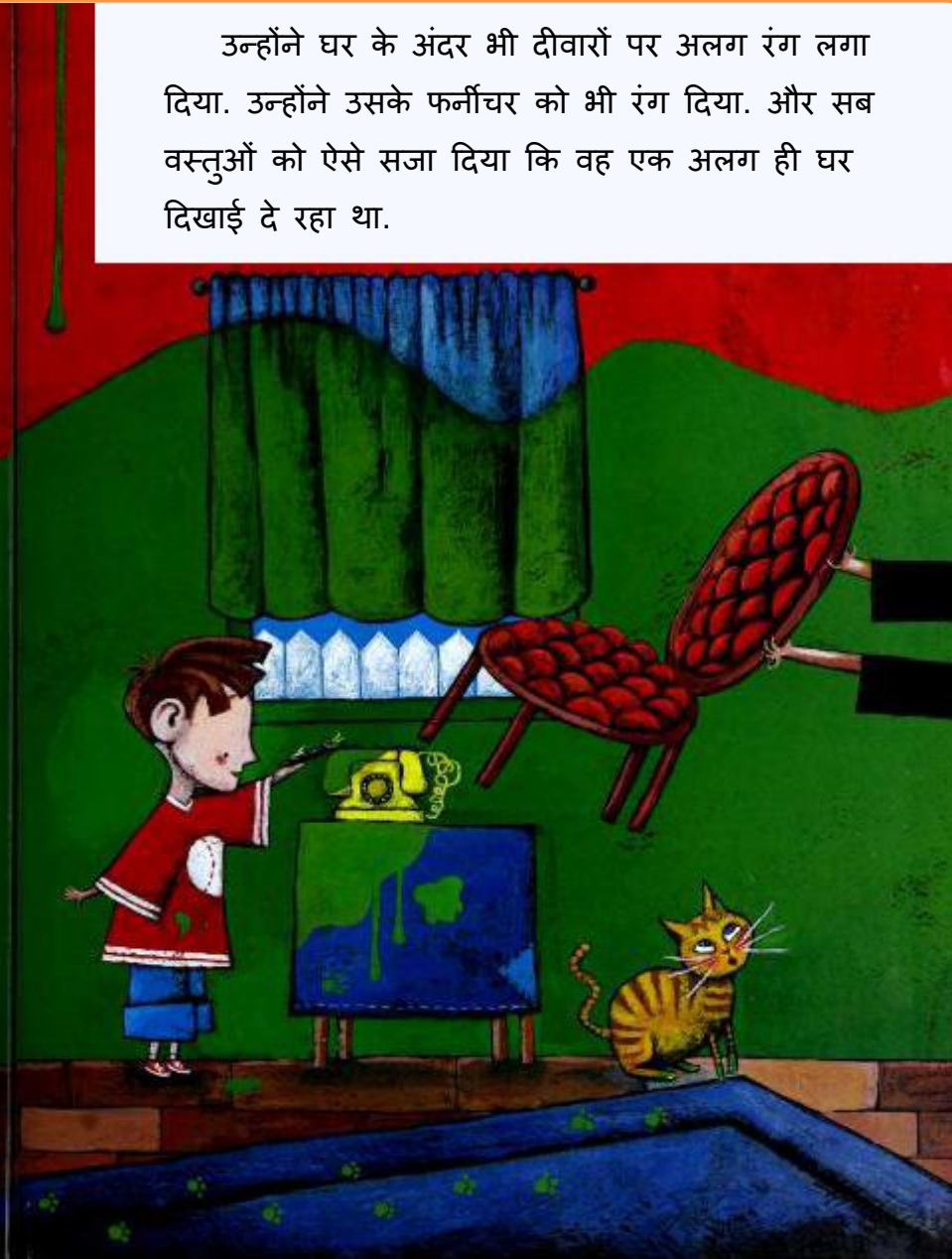
बहुत समय न बीता था कि अशिष्ट आदमी लौट आया. गाँव में आने के बाद जिससे भी वह मिला उससे उसने फिर से अपशब्द कहे. और फिर से टीन के डिब्बों को ज़ोर से बजाने लगा. धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम!

लोग उसके आसपास इकट्ठे हो गए और चतुर लड़के ने कहा, 'हेलो! आप कौन हैं?'

'तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ,' अशिष्ट आदमी ने डिब्बे को बजाते हुए कहा.
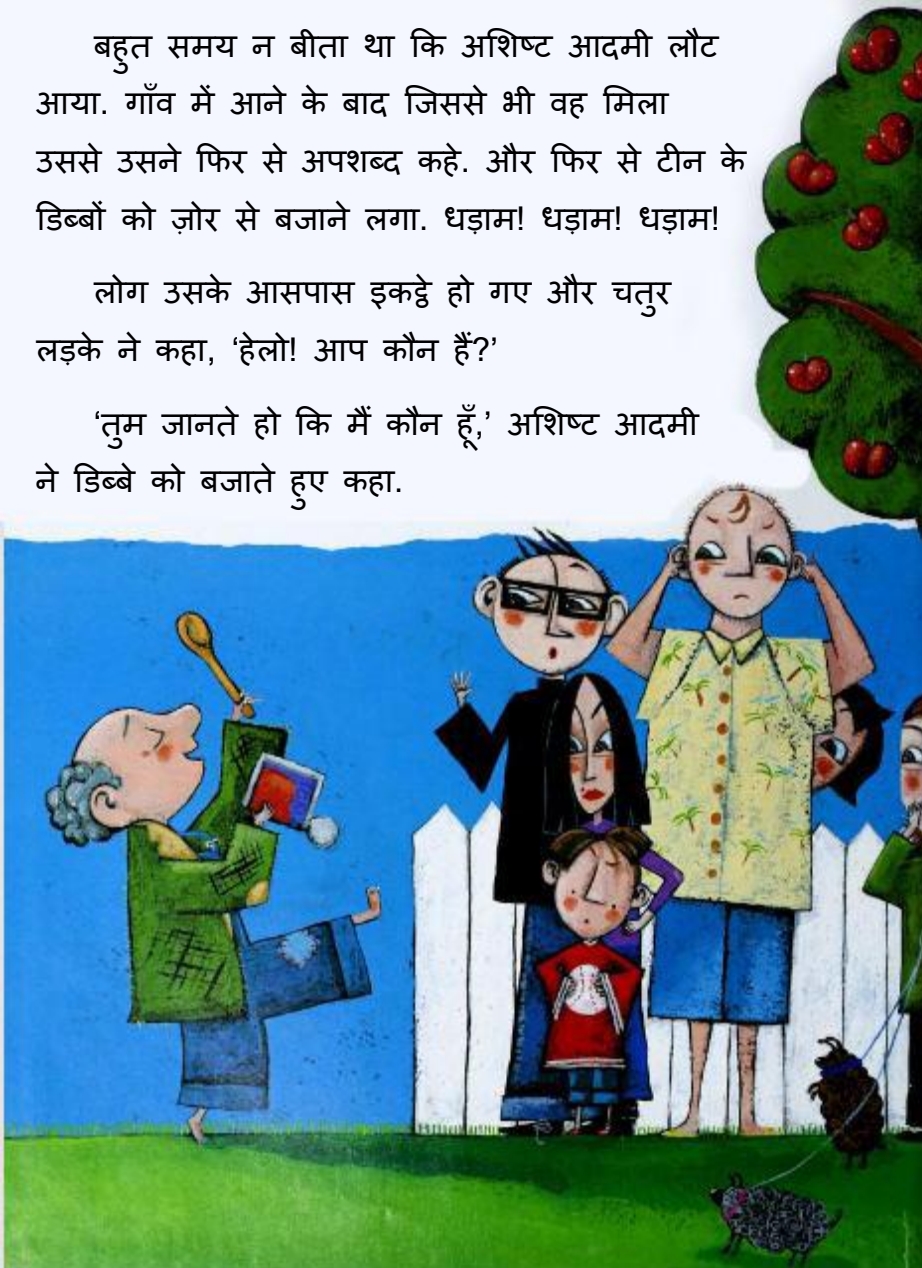
'ओह, नहीं, हम नहीं जानते!' लोगों ने कहा.

'हाँ, तुम जानते हो! यह मेरा आलू का खेत है.' उस आदमी ने अपने खेत की ओर संकेत करते हुए कहा.

'लेकिन इस खेत में तो गाजरें लगीं हैं,' चतुर लड़के ने ज़मीन में से एक गाजर निकालते हुए कहा. 'यह आपका खेत नहीं हो सकता.'

‘लेकिन मेरा घर वहां पर है!’ उस आदमी ने कहा.

‘आपका घर किस रंग का है?’ चतुर लड़के ने पूछा.

‘तुम भली-भांति जानते हो कि मेरा घर लाल रंग का है,’ आदमी ने कहा.

‘लेकिन उस घर का रंग तो हरा है,’ चतुर लड़का बोला.

उस आदमी ने अपने घर को बड़े ध्यान से देखा और बोला, ‘हे भगवान, यह घर तो हरा है.’

फिर वह दौड़ कर एक खिड़की के पास आया और घर के भीतर देखने लगा और पाया कि सब कुछ नया और अनजाना था.

'अरे,' उस आदमी ने अपना सिर खुजलाते हुए कहा. 'शायद मैं इस गाँव का रहने वाला नहीं हूँ.'

उसने आसपास खड़े लोगों की ओर देखा और फिर अपनी आँखें झुका लीं और फिर अचानक बहुत उदास हो गया. 'लेकिन अगर मैं इस गाँव का रहने वाला नहीं हूँ तो मैं किस गाँव का रहने वाला हूँ?'

'यह एक रहस्य है,' चतुर लड़का बोला. 'यह रहस्य हम आपको बता सकते हैं लेकिन सिर्फ एक शर्त पर. आपको वचन देना होगा कि आप सदा शिष्टाचार से काम लेंगे और किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करेंगे और सबके साथ विनम्रता से बात करेंगे. अगर आप ऐसा वचन देते हैं तो हम आपका रहस्य बता देंगे.'

'मैं वचन देता हूँ! मैं वचन देता हूँ!' उस आदमी ने कहा. 'अब प्लीज़ मुझे बताओ!'

और फिर सब लोग एक साथ बोले, 'हमने तुम्हारे घर को बाहर से रंग दिया.' 'हमने तुम्हारे खेत में गाजरे गाड़ दीं.' 'हमने घर के अंदर भी रंग कर दिया.' 'हमने तुम्हारे फर्नीचर को भी नया रंग कर दिया.' 'और फिर हमने उसे अलग ढंग से सजा दिया.'

'हमने यह सब आपको शिक्षा देने के लिये किया,' चतुर लड़के ने कहा. 'लेकिन अब आपने वचन दे दिया है कि आप सदा अच्छा व्यवहार करेंगे. हम सब कुछ फिर से बदल देंगे और हम एक साथ प्रसन्नता से रहेंगे.'

तो उस अशिष्ट आदमी ने फिर से वचन दिया कि वह अपना व्यवहार बदल लेगा. उसने वचन दिया और फिर वचन दिया और एक बार और वचन दिया. और तब लोगों ने बदल कर सब कुछ पहले जैसा कर दिया.

उस दिन के बाद से जब कोई उसे 'शुभ दिवस' कहता तो वह आदमी बड़ी प्रसन्नता से कहता, 'आपको भी शुभ दिवस.'

और जब कोई उसे कहता, 'शुभ संध्या,' तो वह भी बड़ी विन्रमता से कहता, 'आपको भी शुभ संध्या.'

और फिर कभी उसने टीन के डिब्बे न बजाये. और सच मैं उस दिन के बाद से सब लोग प्रसन्नता से उस गाँव में रहे.

समाप्त